प्रातःक्लास ओमशांति 14.9.67

रिकार्ड–तुम्हें पाके .....ओमशांति। डबल भी कह सकते हैं। डबल ओमशांति। आत्मा अपना परिचय दे रही है। मैं आत्मा शांति स्वरूप हूं। हमारा निवास स्थान शांतिधाम है और बाबा के हम सब सन्तान हैं। सभी आत्माएं ओम कहती हैं। और वहां हम सब भाई2 हैं। फिर यहां भाई–बहन बनते हैं। अब भाई–बहन से नाता शुरू होता है। बाप समझाते हैं हमारे सब बच्चे हैं। ब्रह्मा की भी सन्तान हो इसलिए तुम भाई–बहन ठहरे। तुम्हारा और कोई सम्बंध नहीं है। भाई–बहन। सब कहेंगे हम प्रजापिता के सन्तान ब्रह्माकुमार कुमारियां हैं। बाप पुरानी दुनियां को चेंज करने इस समय ही आते हैं। बाप ब्रह्मा द्वारा ही नई सृष्टि रचते हैं। ब्रह्मा से भी तैलक है ना। युक्ति भी कितनी अच्छी है। सब ब्रह्माकुमार कुमारियां अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है और अपन को भाई–बहन समझना है। क्रिमिनल आई न रहनी है। कुमार–कुमारी जैसे बड़े होते जाते हैं तो आंखें क्रिमिनल बनती जाती हैं। ताकि फिर क्रिमिनल एक्ट कर लेते हैं। क्रिमिनल एक्ट होती है रावणराज्य में। सतयुग में क्रिमिनल एक्ट होती नहीं। क्रिमिनल अक्षर ही नहीं होता। यहां तो क्रिमिनल एक्ट बहुत हैं। उनके लिए फिर कोर्ट आदि भी है। वहां कोर्ट आदि होती नहीं। वंडर है ना। न जज, न पुलिस ,न जेल आदि होती है। यह सब है दुःख की बातें। जो यहां हो रही है। इसलिए बच्चों को समझाया गया है यह तो खेल है सुख और दुःख का। हार और जीत का। इनको तुम ही समझते हो। गाया हुआ है माया ते हारे हार है.....माया पर जीत बाप आय आधा कल्प लिए पहनाते हैं। फिर आधा कल्प हार खाते हैं। थोड़ा2 दुःख उठाते हम बहुत दुःखी हो जाते हैं। फिर बाप को बुलाते हैं। बाप कहते हैं हमको भी आना पड़ता है। यह कोई नई बात नहीं। यह तो साधारण पाई–पैसे का खेल है। फिर तुम मुझे याद करते हो तो अपना राज्य–भाग्य आधा कल्प लिए लेते हो। रावणराज्य में मुझे भूल जाते हो। रावण दुश्मन है। उनको हर वर्ष भारतवासी जलाते ही आते हैं। जहां बहुत भारतवासी होंगे वहां करते होंगे। कहेंगे यह भारतवासियों के धर्म का उत्सव आदि है। अभी दशहरा आय रहा है। बच्चों को समझाना है। वह तो हद की बात है। रावणराज्य तो अभी सारी विश्व पर है। सिर्फ लंका पर नहीं है। विश्व तो बहुत बड़ी है ना। बाप ने समझाया है यह सृष्टि सारी सागर पर खड़ी है। मनुष्य कहते हैं नीचे एक बैल वा गउ है, जिनके सींग पर सृष्टि खड़ी है। फिर थक जाती है तो बदलती है। अब यह बातें तो हैं नहीं। पृथ्वी तो पानी पर खड़ी है। चारों तरफ पानी ही पानी है। अब तो सारी दुनियां में रावणराज्य है। फिर राम अथवा ईश्वरीय राज्य स्थापन करने बाप को आना पड़ता है। सिर्फ ईश्वर अक्षर कहने से भी कह देते हैं। ईश्वर तो सर्वशक्तिवान है। सब कुछ कर सकते हैं। फालतू महिमा हो जाती है। इतना लव नहीं रहता। यहां ईश्वर को बाप कहा जाता है। बाप कहने से मिलने की बात हो जाती है। शिवबाबा कहते हैं हमेशा बाबा2 कहना चाहिए। ईश्वर या प्रभु अक्षर भूल जानी चाहिए। बाबा ने कहा है मामेकम् याद करो। प्रदर्शनी आदि में भी जब समझाओ तो घड़ी2 शिवबाबा का परिचय दो। शिवबाबा एक ही उंच ते उंच है ,जिसको गॉड फादर कहा जाता है। मुसलमान अल्लाह कहते हैं। सुबह को भी 10मिनट कुरान का बैठ अर्थ करते हैं कि अल्लाह मियां ने क्या कहा है। किसको दुःख न देना चाहिए। यह न करना चाहिए। ऐसे नहीं समझते हैं कि बाबा ने कहा है। बाबा अक्षर सभी से मीठा है। शिवबाबा, शिवबाबा मुख से निकलता है। मुख तो मनुष्य का ही होगा। गउ का मुख थोड़े ही हो सकता। बाबा कहते हैं मनुष्य कितने पत्थर बुद्धि हैं। उसमें यह भी पत्थर बुद्धि था। मनुष्य पत्थर बुद्धि यह नहीं समझते गउ मुख (से) ज्ञान कैसे मिल सकता है। ज्ञान तो जरूर मनुष्य ही देंगे। तुम हो शिवशक्तियां। तुम्हारे मुखकमल से ज्ञानामृत निकलता है। तुम्हारा नाम बाला करने गउमुख कह दिया है। गंग के लिए ऐसे नहीं कहेंगे कि मुखकमल से अमृत निकलता है। तुम हरेक के मुख कमल से ज्ञानामृत निकलता है। ज्ञानामृत पिया तो फिर विख पी नहीं सकते। अमृत पीने से तुम देवता बनते हो। विख से असुर। अब मैं आया हूं असुरों को देवता बनाने। तुम अब दैवी सम्प्रदाय बन रहे

हो। संगमयुग कब ,कैसे होता है यह भी किसको पता नहीं। तुम जानते हो हम ब्राह्मण ब्रह्माकुमार–कुमारियां पुरुषोत्तम संगमयुगी हैं। बाकी जो भी हैं सब कलियुगी। तुम कितने थोड़े हो। झाड़ की भी तुमको नालेज है। झाड़ पहले छोटा होता है। फिर वृद्धि को पाता है। कितनी इन्वेंशन निकालते हैं कि पैदाइश कम कैसे हो ;परंतु नर चाहते कुछ और हैं, और की औरी भई। चितवत.....सबका मृत्यु तो होना ही है। चिवत क्या करते रहते हैं। सब ठग लोग हैं। अनेक प्रकार के प्लैंस आदि बनाते रहते हैं। तुम्हारा ईश्वरीय प्लैन देखो कैसा है। वह अनेक आसुरी प्लैन चल रही है। बाबा का है गुप्त प्लैन। वह कितने प्लैन बनाते हैं और अन्न मंगाते रहते हैं। समझते हैं अब फसल बहुत अच्छा होगा। आई बरसात कितना नुकसान कर देती। नैचुरल कैलिमिटीज को कोई समझ न सके। कोई भी बात पर ठिकाना नहीं है। कहां फसल हो ओर बर्फ के ओले पड़ जाये तो कितना नुकसान हो जाता। न पड़े तो भी नुकसान। पड़े तो भी नुकसान। इनको कुदरती आपदा कहा जाता है। यह तो ढेर होनी है। इनसे बचने लिए बहुत बहादुर होना चाहिए। कोई का आपरेशन होता है वह देख नहीं सकते। तो अनकान्सेस हो जाते हैं। अब इस सारी सृष्टि का आपरेशन होना है। बाप कहते हैं मैं आय सबका आपरेशन करता हूं। सारी सृष्टि रोगी है। अविनाशी सर्जन भी बाप का नाम है। यह सारी विश्व का आपरेशन कर देंगे। जो फिर विश्व में रहने वाले को कब दुःख नहीं होगा। कितना बड़ा सर्जन है। आत्माओं का भी आपरेशन ,बेहद की सृष्टि का भी आपरेशन करने वाला सर्जन है। वहां मनुष्य तो क्या जनावर भी रोगी नहीं रहते। बाप बैठ समझाते हैं मेरा और बच्चों का क्या पार्ट है। इसको कहते हैं रचता और रचना की आदि,मध्य,अंत का ज्ञान, जो तुम ही ले रहे हो। बच्चों को पहले2 तो यह खुशी होनी चाहिए। आज सतगुरूवार डे भी हमेशा सत बोलना चाहिए। व्यापार में कहते हैं ना सत्य बोलो। ठगी की बात न करो। फिर भी लोभ में आय कर कुछ कम कर सौदा कर देंगे। सच्च कब कोई बोलते नहीं। झूठ ही झूठ बोलते हैं। इसलिए सत्य को याद करते हैं। कहते हैं ना सत नाम संग है। वह झूठ बोलते हैं। अभी तुम जानते हो बाबा जो सत्य है वह संग चलेगा हम आत्माओं के साथ। अभी सत्य के साथ तुम आत्माओं का संग हुआ है तो तुम ही साथ जावेंगे। तुम बच्चे जानते हो शिवबाबा आया हुआ है,जिसको द्रुथ कहा जाता है। वह हम आत्माओं को प्योर बनाय साथ ले जावेंगे एक ही बार। सतयुग में ऐसे नहीं कहते हैं राम2 संग है या सत्य नाम संग है, नहीं। बाप कहते हैं अभी मैं तुम बच्चों के पास आया हूं। नयनों पर बिठाय ले जाता हूं यह नयन नहीं। तीसरा नेत्र। तुम बारात बनते हो। तुम जानते हो इस समय बाप आये हैं। करोड़ों को साथ ले जावेंगे। शंकर की बारात नहीं। शिव की बच्चों की बारात है। वह पतियों का पति भी है। कहते हैं तुम सब ब्राइड्स हो। मैं हूं ब्राइडग्रूम। तुम सब आशुक हो मुझ एक माशूक के। माशूक एक ही होता है। तुम आधा कल्प से मुझ माशूक के तुम आशुक हो। अभी मैं आया हुआ हूं। सभी भक्त हैं। भक्तों की रक्षा करने वाला है भगवान। आत्मा भक्ति करती है शरीर के साथ। सतयुग–त्रेता में भक्ति होगी नहीं। भक्ति का फल सतयुग में मांगते हैं, जो अब बच्चों को दे रहे हैं। वह तुम्हारा माशूक है। जो तुमको बिल्कुल साथ ले जावेंगे। फिर तुम अपने पुरुषार्थ अनुसार जाय राज–भाग लेंगे। यह कहां भी लिखा हुआ नहीं है। कहते हैं शंकर ने पार्वती को अमरकथा सुनाई। तुम सब हो पार्वतियां। मैं हूं कथा सुनाने वाला अमरनाथ। अमरनाथ एक को ही कहा जाता है। उंच ते उंच बाप। उनको अपनी देह नहीं है। कहते हैं मैं अमरनाथ तुम बच्चों को अमरकथा सुनाता हूं। शंकर–पार्वती यहां कहां से आय सकते। वह तो सूक्ष्मवतन में जहां सूर्य–चांद की भी गम नहीं रहती। बाकी सब भक्तिमार्ग की दंत कथायें हैं। गीता कैसे बैठ बनाई है हे अर्जुन भिंडी खाने से यह होता है.....ऐसे2 कथायें बैठ बनाई हैं। झूठ मिरई झूठ सच्च की रत्ती नहीं। साधु–संत आदि जो सुनाते हैं सब झूठ। गीता में है भगवानुवाच। श्रीमदभगवद गीता। भगवान तो भगवान ही होना चाहिए ना। कहते हैं कृष्ण ने कहा सर्वव्यापी हूं। अब

कृष्ण थोड़े ही कहेंगे कि मैं सर्वव्यापी हूं। कृष्ण के भक्त होंगे तो कहेंगे जिधर देखो कृष्ण ही कृष्ण। बहुत खुश होते रहते हैं। भक्तिमार्ग में तुम क्या2 सुनते आये हो। अब बाप क्या समझाते हैं। वंडर है व्यास ने क्या बैठ बनाया। वेद व्यास कहते हैं। तो क्या व्यास ने बैठ वेद बनाई। भगवान कौन है यह भी नहीं जानते। अगर भगवान सर्वव्यापी है तो वेद कैसे बैठ लिखेगा। अब तुम समझते हो झूठ ही झूठ है। सत्य है ही एक बाप। तुमको सत्यकथा सुनाते हैं। बाप बिगर सच्चा कथा कोई सुनाय न सके। यह भी समझते हो विनाश होने में टाइम लगता है। कितनी बड़ी दुनिया है। कितने ढेर मकान आदि गिर कर खतम होंगे। अर्थक्वेक में कितना नुकसान होता है। कितने मरते हैं। कहां अर्थक्वेक होती है फिर झट मकान आदि बनाय लेते हैं। अभी तो सारी विश्व की अर्थक्वेक होनी है। फिर बाकी तुम्हारा छोटा झाड़ होगा। देहली परिस्तान थी। एक ही परिस्तान में लक्ष्मी–नारायण का राज्य चलता है। कितनी बड़ी महल ,बड़े बगीचे होंगे। बेहद की जागीर मिलती है ना। तुमको कुछ भी खच्चा नहीं करना पड़ता है। बाप कहते हैं इनके लाइफ में ही कितना सस्ता अनाज था। तो सतयुग में कितना सस्ता होगा। देहली जितनी तो एक घर और जमीन आदि होगी। मीठी नदियों पर तुम्हारा राज्य होगा। एक2 को क्या न होगा। सदैव अन्न मिलता रहेगा। वहां के फल–फूल भी देखो हैं कितने बड़े2 होते हैं। तुम सूबी रस पीकर आते थे। कहते थे वहां माली है। अब माली तो जरूर वैकुंठ में अथवा नदी किनारे ही होगा। सूक्ष्मवतन में थोड़े ही माली होगा। वहां कितने थोड़े होंगे। कहां अभी 5करोड़ ,कहां 9लाख होगी और सब कुछ तुम्हारा होगा। बाप ऐसी राजाई देते हैं जो हमसे कोई छीन न सके। आसमान ,धरती आदि सबके मालिक तुम रहते हो। गीत भी बच्चों ने सुना। यह गीत तो सबको घर में रखना चाहिए। जाग सजनियां जाग.....इस पाप की दुनियां से .....ऐसे2 गीत 6/8हैं जो घर में जरूर रखना चाहिए अपन को रिफ्रेश करने लिए। ऐसे2 गीत सुनने से ही खुशी का पार चढ़ जाता है। देखो अवस्था में कुछ गड़बड़ है गीत बजा लो। यह है खुशी की। तुम तो अर्थ भी जानते हो। बाबा बहुत युक्तियां बतलाते हैं अपन को हर्षितमुख बनाने की। बाबा को लिखते हैं बाबा इतनी खुशी नहीं होती। माया की तूफान आती है। अरे, माया की तूफान आये तुम बाजा बजाय लो खुशी के लिए। बड़े2 मंदिरों में भी फाटक पर बाजा बजाते हैं। बाम्बे में माधोबाग में लक्ष्मी–नारायण के मंदिर के फाटक पर बाजा बजता रहता है। तुमको कहते हैं यह फिल्मी रिकार्ड क्यों बजाते हो?उनको क्या पता यह भी ड्रामा अनुसार काम में आने की चीज है। इनका अर्थ तो तुम बच्चे ही समझते हो। यह सुनने से भी बाद में आ जावेंगे ;परंतु बच्चे भूल जाते हैं। घर में किसको कोई गमी हो तो यह गीत ले जाना चाहिए। सुनकर बड़ा खुश होंगे। यह बहुत वैल्युएबल चीज है। कोई के घर आदि में झगड़ा हो तो रिकार्ड बैठ सुनो तो गम अथवा दुःख उड़ जावेगा। स्त्री का पति साथ झगड़ा हो जाये तो बैठकर रिकार्ड बजावे। अर्थ बैठ सुनावे। अवस्था बड़ी हर्षितमुख चाहिए। बच्चों को बहुत खुशी रहनी चाहिए। बाबा युक्तियां भी बताते रहते हैं। विख पर भी बहुत झगड़ा चलता है। बोलो भगवानुवाच है काम महाशत्रु है। इन पर जीत पाने से हम विश्व के मालिक बनेंगे। फिर फूलों की वर्सा होगी। जयजयकार हो जावेगी। सोने की फूल बरसेगी। तुम अभी कांटे से सोने के फूल बन रहे हो। फिर तुम्हारा अवरतण होगा। फूल नहीं बरसते ;परंतु तुम फूल बनकर आते हो। मनुष्य समझते हैं सोने के फूल बरसते हैं। एक राजकुमार विलायत में गया। वहां पार्टी दी थी। उनके लिए सोने के फूल बनवाये। सबके उपर वर्सा की। खुशी के मारे इतनी मीतबा(मर्तबा) की। एक पार्टी में 40हजार रुपये की फूल बनाई। सच्चे2 सोने की बनाई। बाबा उनके स्टेअ आदि को अच्छी रीत जानते हैं। वास्तव में तुम फूल बनकर आते हो। सोने के फूल तुम उपर से आते हो। तुम बच्चों को कितनी लॉट्री मिल रही है विश्व की बादशाही की। जैसे लौकिक बाप बच्चों के लिए सौगात लाते हैं तो बच्चे कितने खुश होते हैं। बाबा भी कहते हैं तुम्हारे लिए यह लाया हूं। कोई छोटी सौगात पाय कहते हैं बाबा आप तो विश्व की बादशाही देते हो। बच्चे यह यादगार है (यह मुरली इतनी ही है)